जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

हम मूर्ति के नहीं, मूर्ति के माध्यम से मूर्तिमान (वीतरागी सर्वज्ञ भगवान) के पुजारी हैं।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ : 18

वर्ष : 26, अंक : 19 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (प्रथम) 2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

साहू रमेशचन्द्रजी जैन डी. लिट् की उपाधि से सम्मानित

नई दिल्ली : जैन समाज के अग्रणी नेता साहू श्री रमेशचन्द्रजी जैन को बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी की ओर से पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए इण्डिया इन्टरनेशनल सेन्टर में दिनांक 24 नवम्बर, 2003 को आयोजित दीक्षान्त समारोह में डी. लिट् की उपाधि से सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री संजयजी पासवान ने की। इस अवसर पर पूर्व राज्यपाल श्री ए. आर. किदवई बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के वाईस चांसलर एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

श्री रमेशचन्द्रजी जैन का अभिनन्दन करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय ने अपने सम्बोधन में कहा कि पत्रकारिता व शिक्षा के क्षेत्र में श्री जैन का उल्लेखनीय योगदान रहा है। आप देश के सबसे बड़े समाचार पत्र समूह 'टाईम्स ऑफ इण्डिया' के कार्यकारी निदेशक एवं प्रबन्ध सम्पादक तथा नवभारत के सम्पादक रहे हैं। इसके अतिरिक्त ईकानॉमिक टाईम्स व सांध्य टाईम्स के प्रकाशन का दायित्व भी आपने अत्यन्त कुशलतापूर्वक संभाला है। आप देश की सबसे बड़ी न्यूज एजन्सी प्रेस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया एवं इण्डियन न्यूज पेपर सोसायटी के भी अध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान में आप भारत सरकार के भारतीय जन-संचार संस्था (इण्डियन इन्स्टिट्यूट ऑफ मास कम्यूनिकेशन्स) के अध्यक्ष हैं। इसप्रकार पत्रकारिता के क्षेत्र में इतने दीर्घ अनुभव के कारण आपको पत्रकारिता क्षेत्र का शिखर पुरुष भी कहा जा सकता है। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय आपको इस उत्कृष्ट योगदान के लिए विद्या-वारिधि (डी. लिट्) की उपाधि सम्मानित करते हुए गौरवान्वित अनुभव करता है।

ज्ञातव्य हैं कि इससे पूर्व गुरुकुल कनखल द्वारा आपको विद्या-वाचस्पति (डॉक्टरेट) की उपाधि से भी सम्मानित किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त आपका अनेक शैक्षिक संस्थाओं तथा शोध संस्थानों को भी महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त हुआ है। आपकी इस गौरवमयी उपलब्धि पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई ! **ह्न सम्पादक**

वेदी एवं निवृत्तिनिलय का शिलान्यास सम्पन्न

नई दिल्ली : अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र, घेवरा मोड के प्रांगण में द्विदिवसीय शिलान्यास समारोह दिनांक 10 एवं 11 दिसम्बर, 2003 को सानन्द सम्पन्न हुआ।

दिनांक 10 दिसम्बर को प्रात: पंच परमेष्ठी मण्डल विधान के उपरान्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का समयसार ग्रन्थ पर आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। दोपहर एवं रात्रि में पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन, आगरा के मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ पर प्रवचन हुये।

दिनांक 11 दिसम्बर को डॉ. भारिल्ल के प्रवचन के पश्चात् शिलान्यास सभा आयोजित की गई। सभा की अध्यक्षता श्री शेखरचंदजी जैन ने की। देश के लगभग समस्त प्रांतो से पधारे गणमान्य श्रेष्ठीजनों एवं लब्ध प्रतिष्ठित विद्वज्जनों ने सभा को गौरवान्वित किया। सभा का सफल संचालन पण्डित राकेशजी शास्त्री ने किया।

सभा के बाद 1008 श्री महावीर भगवान, शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथ भगवान, आदिनाथ एवं चन्द्रप्रभ भगवान की वेदियों के अतिरिक्त निवृत्तिनिलय के सत्य-संयम-शील खण्डों का शिलान्यास किया गया।

महोत्सव की मंगल विधि बाल ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के निर्देशन एवं बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व में पं. ज्ञानचन्दजी ललितपुर, पं. ऋषभजी उस्मानपुरा, पं. प्रदीपजी धामपुर, पं. संदीपजी शास्त्री एवं पं. अमितजी शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराई गई। **ह्न आदीश जैन**

सम्पादकीय –

हरिवंश कथा

42

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

''वस्तुतः ये संबंध भी पूर्व संस्कारों के आधार से ही निश्चित होते हैं, जिसका जिसके साथ सम्बन्ध होना होता है, उसे देखते ही अनुकूल भाव बन जाते हैं।''

वह ऐसा कह ही रही थी कि उसके कानों में 'पवण' नामक वाद्ययंत्र की मधुर ध्वनि पड़ी। वह ध्वनि मानो स्पष्ट कह रही थी कि तुम्हारे मन को हरण करनेवाला राजहंस इधर बैठा है, अतः इस ओर देख ! ज्यों ही कन्या *रोहणी* ने मुड़कर देखा तो कुमार वसुदेव दिखे। दोनों का चित्त एक दूसरे की ओर सहज आकर्षित हो गया और *रोहणी* ने वसुदेव के गले में वरमाला पहनाकर उसका वरण कर लिया।

अधिकांश नीतिज्ञ राजाओं ने तो स्वेच्छा से रोहणी के चयन की हार्दिक अनुमोदना की, किन्तु कुछ ईर्ष्यालु मात्सर्ययुक्त राजाओं ने अपना अपमान अनुभव करते हुए उल्टे-सीधे कुतर्क प्रस्तुत करके विरोध प्रगट किया और स्वयंवर को निरस्त करने की माँग की।

धीर-वीर वसुदेव ने क्षुभित राजाओं से कहा कि ह्न ''स्वयंवर में आई हुई कन्या अपनी इच्छानुसार वर को वरती है, अतः इस विषय में किसी को भी अशान्ति फैलाना और स्वयं दुःखी होना योग्य नहीं है; फिर भी यदि किसी को अपने किसी भी प्रकार के बड़प्पन पर गर्व है तो मैं उसकी चुनौती स्वीकार करने के लिए भी तैयार हूँ।''

कुमार वसुदेव की गर्वोक्ति सुनकर राजा जरासंध कुपित हो उठा। अपने अधीनस्थ राजाओं को आदेश दे दिया कि ह्न ''वसुदेव को एवं कन्या के भाई और पिता को बन्दी कर लिया जाय। ''कुछ राजा जो पहले से ही वसुदेव से असंतुष्ट (कुपित) थे, वे भी जरासंध का आदेश पाकर युद्ध के लिए उद्यत हो गये और भयंकर घमासान युद्ध हुआ। एक ओर अकेले धीर-वीर वसुदेव और दूसरी ओर जरासंध के साथ अनेक राजा और उनके साथ में आई हुई उनकी सभी तरह से सुसज्ज सशस्त्र सेना। फिर भी वसुदेव ने अमोघ पराक्रम से सबके छक्के छुड़ा दिये।

कुछ सज्जन जो न्याय नीतिज्ञ थे, उन्होंने कहा ह्न ''यह अन्यायपूर्ण युद्ध हमें तो देखने योग्य भी नहीं है; क्योंकि यह युद्ध एक का अनेक के साथ हो रहा है। एक पर अनेक प्रहार कर रहे हैं, इस कारण यह अन्यायपूर्ण है।''

तदनन्तर धर्मयुद्ध का प्रस्ताव लाते हुए जरासंध ने कहा ह्न ''कन्या के लिए इसके साथ एक-एक राजा युद्ध करें। जरासंध का आदेश पाकर सर्वप्रथम शत्रुंजयकुमार युद्ध करने उठा। वसुदेव ने उसके चलाये बाणों को दूर फैंक उसका रथ और कवच तोड़कर उसे मूर्च्छित कर दिया। इसके बाद क्रमशः दत्तवस्त्र, कालमुख, और शल्य जैसे एक से एक पराक्रमी राजा आये; परन्तु वसुदेव के सामने कोई नहीं टिक सका।

इसके बाद राजा जरासंध ने नेमिनाथ के पिता समुद्रविजय से कहा ह्न ''हे राजन ! आप सब तरह से समर्थ हैं, अतः आप इसके अहंकार को नष्ट करो।'' यद्यपि समुद्रविजय न्याय-नीति के वेत्ता थे, युद्ध नहीं करना चाहते थे; तथापि राजा जरासंध की आज्ञा से तैयार हो गये; क्योंकि युद्ध के विषय में न्याय के वेत्ता भी अपने स्वामी का ही अनुसरण करते हैं।

समुद्रविजय उस समय यह नहीं जानते थे कि कुमार वसुदेव मेरा ही छोटा भाई है, परन्तु वसुदेव जानते थे कि ये मेरे बड़े भाई हैं। अतः समुद्रविजय के तेजी से आते हुए रथ को देख वसुदेव ने अपने सारथी दधिमुख को आदेश दिया ह्न हे दधिमुख ! ''इन्हें तुम मेरा बड़ा भाई समझो। ये हमारे पिता तुल्य पूज्य हैं अतः इनके आगे रथ धीरे-धीरे ले जाना क्योंकि रणभूमि में मुझे इनकी रक्षा का ध्यान रखते हुए ही युद्ध करना है।''

सारथी दधिमुख ने वसुदेव की आज्ञानुसार ही रथ चलाया। उधर समुद्रविजय ने अपने सारथी से कहा ह्न ''हे भद्र ! इस योद्धा को देखकर मेरा मन स्नेहयुक्त क्यों हो रहा है? दाहनी आँख एवं भुजा भी फड़क रही है। पुरुष की दाहनी आँख फड़कना तो बन्धु समागम को सूचित करनेवाली होती हैं। परन्तु युद्ध के मैदान में इस शकुन की संगति कैसे बैठ सकती है?''

सारथी ने कहा ह्न ''स्वामिन ! अभी आप शत्रु के सामने खड़े हैं । जब इसे आप जीत लेंगे तब अवश्य ही बन्धु समागम होगा। हे राजन! यह शत्रु दूसरों के द्वारा अजेय हैं। अतः इसे जीत लेने पर आप अन्य राजाओं के समक्ष राजाधिराज जरासंध से अवश्य ही विशिष्ट सम्मान को प्राप्त करेंगे।''

समुद्रविजय ने सारथी के वचनों को स्वीकार कर युद्ध के लिए तैयार होकर वसुदेव से कहा ह्न हे धीर ! अभी-अभी युद्ध में तुम्हारे धनुष का जैसा कौशल देखा, अब मेरे आगे वैसे ही उसकी पुनरावृत्ति करके दिखाओ तो जानें ! हे शूरवीरता के शिखर ! तुम्हारा अत्यन्त उन्नत मानरूपी शिखर जो अभी तक अनाच्छादित रहा है, मैं उसे अपने बाणरूपी मेघों से अभी आच्छादित करता हूँ। तुम मुझे नहीं जानते ' मै समुद्रविजय हूँ, समुद्रविजय ! समझे!'

कुमार वसुदेव ने भी आवाज बदलते हुए कहा ह्न ' यदि आप समुद्रविजय हैं तो मैं संग्रामविजय हूँ'। यदि आपको विश्वास न हो तो शीघ्र ही धनुष पर बाण चढ़ाकर छोड़िए। *(क्रमशः)*

कहान-संदेश

धर्मी की मंगल भावना

27

● हे जीव ! तू स्वयं ही तीर्थ है अत: अपने में ही स्थिरता कर। यहाँ योगीन्द्रदेव स्पष्ट करते हैं कि सम्मेदशिखर आदि तीर्थ तो पर तीर्थ हैं ! उसके लक्ष से तुझे शुभराग होगा। तू अपने परम तीर्थस्वरूप आत्मा में आरूढ़ हो। उससे तुझे निर्विकल्प आनन्द का अनुभव होगा। अन्य गुरु की सेवा के लक्ष से तुझे राग होगा। तू अपने परमार्थ गुरु की सेवा कर, उसी से तुझे आनन्द की प्राप्ति होगी। अपने आत्मदेव की सेवा कर, अन्य अरहंत, सिद्ध देवों के ध्यान से शुभ विकल्प तथा पुण्यबंधन होता हैं। तू अपने आत्मदेव का ध्यान कर, जिससे तुझे आनन्द के नाथ की भेंट होगी। तू अपने देव-गुरु और तीर्थ के समीप जा, पर के नहीं। ऐसा कहकर राग के कारणभूत व्यवहार देव-गुरु-तीर्थ का लक्ष छुड़ाकर आनन्द के कारणभूत परमार्थ देव-गुरु-तीर्थ का लक्ष यहाँ कराया है।

● प्रत्येक द्रव्य के परिणाम अपने उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य से ही होते हैं, एक द्रव्य के उत्पाद-व्यय-धौव्य में अन्य द्रव्य का किंचित् भी कार्य नहीं है। 'ध्वजा स्थिर थी और एकदम लहराने लगी', वहाँ पवन के आने से लहराने लगी ह्न ऐसा नहीं है। पानी ठण्डा था और फिर गरम हो गया, वहाँ अग्नि के संयोग से गरम हुआ ह्न ऐसा नहीं है। चावल कठिन थे और फिर नरम हो गए, वे पानी के आने से हुए हैं ह्न ऐसा भी नहीं है। बाह्य दृष्टि से देखनेवाले अज्ञानी को निमित्त देखकर भ्रम होता है; परन्तु ऐसा हैं नहीं। घर बैठे थे तब अशुभ परिणाम चल रहे थे और मन्दिर में भगवान के दर्शन करने आये, वहाँ शुभ परिणाम हुए; इसप्रकार एकदम अशुभ में से शुभ परिणाम हुए वे निमित्त के कारण हुए हैं ; ऐसा भी नहीं है, परन्तु अपने उत्पाद-व्यय-ध्रुवता पूर्वक अपने से ही हुए हैं। एक द्रव्य का कार्य दूसरा द्रव्य बिलकुल नहीं कर सकता। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का क्या करेगा ? अहाहा ! ऐसी वस्तु की स्वतंत्रता समझ में आ जाए जो इसकी दृष्टि बाहर के परपदार्थो से हटकर अन्दर की ओर झुक जाए।

● अपने आत्मा को जानने हेतु अरहंत के द्रव्य को, गुणों को तथा प्रगट पर्यायों को यथार्थ जाने; क्योंकि जो अरहंत के द्रव्य-गुण-पर्याय को यथार्थ जानता है, वह सचमुच आत्मा को जानता है। 'यथार्थ' शब्द में बहुत भार है। ऐसे ग्यारह अंग और नव पूर्व को तो अनन्त बार कण्ठस्थ किया है; परन्तु वह कोई अपूर्व वस्तु नहीं है। इसलिए कहते हैं कि अपना स्वरूप जानने के लिए जिसने यथार्थ रूप से अरहंत को जाना है, वह आत्मा को जानता है; क्योंकि त्रैकालिक स्वभाव की अपेक्षा दोनों में सचमुच कोई अन्तर नहीं है।

● सर्वज्ञ अर्थात् द्रव्य में पूर्ण, गुण में पूर्ण, पर्याय में पूर्ण प्रगट ज्ञान की श्रद्धा करने से अंतर में मात्र ज्ञान की प्रतीति हो जाती है, उसी का अनुभव होता है। इसमें दूसरा कुछ करना नहीं है।

● एक समय की पर्याय से भी उदासीन होकर अपने त्रैकालिक आनन्द कन्द ज्ञायक को पकड़ ! भावेन्द्रिय-क्षायोपशमिक ज्ञान तो खण्ड-खण्डरूप ज्ञानपर्याय है और आत्मा तो पूर्ण निरावरण, अखण्ड, एक प्रत्यक्ष प्रतिभास स्वरूप परम पदार्थ है, वह भावेन्द्रिय के लक्ष से भी पकड़ में नहीं आता; पकड़नेवाली पर्याय स्वयं क्षायोपशमिकभावरूप है, परन्तु उसके लक्ष से भगवान आत्मा पकड़ में नहीं आता। वस्तु स्वयं अपने क्षायोपशमिक ज्ञान की पर्याय द्वारा अपने ज्ञायकस्वभाव का आश्रय करे तो पकड़ में आए। अहा ! ऐसा मार्ग है परमात्मा का। महाविदेह में भगवान के निकट तो यह सनातन मार्ग चलता ही रहता है। सत्य को कहीं संख्या की आवश्यकता नहीं है कि अनेक लोग मानें तभी सत्य कहा जायेगा। वस्तु जिसप्रकार सत्य है, उसे उसी प्रकार माने तो सत्य कही जाती है।

● दूसरों का तो कुछ कहना या लेना-देना है ही नहीं; मात्र अपने-अपने में ही विचार, मन्थन चलते हो तो वह विकल्प भी तोड़ना है। पर्याय में पर्याय से ध्रुव का निर्णय करना है ! विकल्प को तोडुँ ऐसे विकल्प से भी पार (पृथक्) चैतन्य पदार्थ है। उसका अस्तित्व ख्याल में लेना है। ''राग से तथा पर्याय से भिन्न मैं एकमात्र ज्ञायक हूँ'' ह्न बस ऐसा निरन्तर मंथन चलना चाहिए।

● भगवान आत्मा ज्ञातृत्व का भण्डार है। ऐसे आत्मा से भिन्न जितने भी भाव हैं, वे सब परभाव हैं। जिस भाव से तीर्थंकर गोत्र का बन्ध हो, वह भाव भी परभाव है। यदि तुझे चतुर्गति के दु:खों का भय लगा हो, तो उन परभावों को छोड़ दे ! राग मुझे लाभदायक है ह्न ऐसा जो मानता है, वह तो शरीर को जीव मानता है। भगवान आत्मा सच्चिदानंद प्रभु है और शरीर कर्म, राग, शुभाशुभभाव वह सब पर है। जो राग के कण को अपना मानता है, वह बहिरात्मा शरीर को ही आत्मा मानता है।

● भगवान ! तुझमें शरीर-मन-वाणी तो है ही नहीं तथा राग भी तुझमें नहीं है; किन्तु यहाँ तो उससे भी गहरी बात कहते हैं कि तुझमें जो पूर्ण शुद्ध पर्याय प्रगट होती है, शुद्ध निश्चय नय से वह भी तू नहीं हैं, वह तेरी नहीं है; क्योंकि वह पर्याय तुझमें हैं ही नहीं। तू तो त्रैकालिक तत्त्व सदा कल्याणस्वरूप शुद्ध ही है। भगवान आत्मा सदा आनन्दमय, सदा वीर्यमय, सदा शिवमय ऐसा परमतत्त्व है, तू इतना महान परमात्मस्वरूप सदा कल्याणमय है, उसमें किसी भी पयार्य का प्रवेश नहीं है।

● जो अनन्तानन्त गुणों का महान अस्तित्त्व विद्यमान है, उसकी दृष्टि करने पर विकल्प स्वत: ही टूट जाते हैं, परन्तु विकल्प को मैं तोड़ सकता हूँ ह्न ऐसी मान्यता में तो मिथ्यात्व होता है।

● भगवान कहते हैं कि ह्न प्रभु ! तू एक स्वरूप से तो भीतर में विराजमान है और तेरी जो पर्याय है वह प्रमाण का विषय है। द्रव्य और पर्याय दो का ज्ञान है वह प्रमाण है, परन्तु निश्चयनय का विषय तो पर्यायरहित अकेला द्रव्य है। द्रव्य पर्याय को नहीं करता; द्रव्य पर्याय को स्पर्श ही नहीं करता ह्न तो करेगा कहाँ से ? सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप जो धर्मदशा हैं उसे भी द्रव्य छूता नहीं है तो करेगा कहाँ से ?

हॉस्पीटल का शिलान्यास एवं शिक्षण शिविर सम्पन्न

पूना : श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मण्डल, पूना द्वारा लीला चैरिटेबिल हॉस्पीटल के शिलान्यास महोत्सव के अवसर पर आध्यात्मिक शिक्षण शिविर तथा श्री रत्नत्रय मण्डल विधान एवं श्री शांति विधान का आयोजन दिनांक 12 दिसम्बर से 14 दिसम्बर, 2003 तक किया गया।

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रात: एवं सायंकाल मार्मिक प्रवचन हुए। इसके अलावा ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, पण्डित दिनेशभाई शाह व विदुषी डॉ. उज्ज्वलाजी शाह, मुंबई के प्रवचनों का लाभ भी उपस्थित श्रोताओं को प्राप्त हुआ।

हॉस्पीटल का शिलान्यास श्री अनंतभाई सेठ के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के निर्देशन में सम्पन्न हुए। **ह्न आदिनाथ मोनाप**

रविवारीय गोष्ठियाँ सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल दिगंबर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में दिनांक 14 दिसम्बर 2003 को '**समयसार कर्त्ता-कर्म अधिकार : एक अनुशीलन**' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया; जिसकी अध्यक्षता श्री कैलाशचन्दजी सेठी, जयपुर ने की। गोष्ठी का संचालन अजित जैन, मौ एवं संयोजन अतुल जैन, कोलारस ने किया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रयंक जैन, रहली तथा चेतन जैन, खड़ैरी को चुना गया।

इसीप्रकार दिनांक 21 दिसम्बर, 2003 को '**न्यायदीपिका : एक अनुशीलन**' विषय पर उपाध्याय वरिष्ठ कक्षा की विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता महाविद्यालय के सह अधीक्षक पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री ने की। संचालन सुनील बेलोकर, सुलतानपुर एवं संयोजन सौरभ जैन, शाहगढ़ ने किया। प्रशांत उखलकर, गोवर्धन व जितेन्द्र जैन, मुंबई श्रेष्ठ वक्ता चुने गए। **ह्न नीरज जैन**

शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

कुरावड़ (राजस्थान) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति, उदयपुर के द्वारा श्री दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन के संयोजकत्व में दिनांक 27 नवम्बर से 5 दिसम्बर, 2003 तक आयोजित शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित आशीषजी शास्त्री, टीकमगढ़ के प्रात: समयसार कलश क्रमांक 131 पर एवं रात्रि में चार अभाव पर सारगर्भित प्रवचन हुए। पं. आशीषजी के द्वारा ही बालकक्षा, जिनेन्द्र-भक्ति इत्यादि अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। अन्तिम दिन परीक्षा का आयोजन किया गया; जिसमें बालवर्ग में प्रिया जैन व चिराग जैन ने प्रथम, ऋचा ने द्वितीय एवं हिना ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रौढ़ वर्ग में कु. अर्चना जैन, पंकज जैन एवं चन्दा भगनोत क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे। **ह्न जीवनलाल कुरावत**

जनवरी माह में आनेवाली तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ

1 **जनवरी**	- भगवान शांतिनाथ का ज्ञान कल्याणक
2 **जनवरी**	- भगवान अजितनाथ का ज्ञान कल्याणक
6 **जनवरी**	- भगवान अभिनन्दन नाथ का ज्ञान कल्याणक
7 **जनवरी**	- भगवान धर्मनाथ का ज्ञान कल्याणक
13 **जनवरी**	- भगवान पद्मप्रभ का गर्भ कल्याणक
19 **जनवरी**	- भगवान शीतलनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक
20 **जनवरी**	- भगवान ऋषभनाथ का मोक्ष कल्याणक
21 **जनवरी**	- भगवान श्रेयांसनाथ का ज्ञान कल्याणक
23 **जनवरी**	- भगवान वासुपूज्य का ज्ञान कल्याणक
25 **जनवरी**	- भगवान विमलनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक
27 **जनवरी**	- भगवान विमलनाथ का ज्ञान कल्याणक
30 **जनवरी**	- भगवान अजितनाथ का तप कल्याणक
31 **जनवरी**	- भगवान अजितनाथ का जन्म कल्याणक

प्राचीन धरोहरों की रक्षा हेतु सम्पर्क करें

जयपुर : श्री महावीर दिग. जैन पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र, जयपुर (अधिकृत ह्न अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी) में प्राचीन, जीर्ण-शीर्ण एवं दुर्लभ पाण्डुलिपियों, अभिलेखों और कागजी दस्तावेजों का संरक्षण किया जाता है। हमारे यहाँ अब तक दिगम्बर जैन मन्दिर, पाटौदी के शास्त्र भण्डार, चौरु, फागी, बांदरसींदरी, विजयनगर एवं मुहाना के शास्त्र भण्डारों से संरक्षण हेतु पाण्डुलिपियाँ आयी हैं। अन्य कोई भी जिनके पास या आपकी जानकारी में दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ, ग्रन्थ, दस्तावेज या प्राचीन अभिलेख नष्ट हो रहे हों, उनकी रक्षा के लिए कृपया निम्न पते पर सम्पर्क करें।

ह्न डॉ. कमलचन्द सोगाणी, संयोजक, जैनविद्या संस्थान समिति, दि. जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-302015

विवाहोपलक्ष्य में दानराशियाँ

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सि. महाविद्यालय के स्नातक विद्वान सचिन पाटनी शास्त्री, कन्नड एवं सौ. कां. सुजाता, मोताला के विवाहोपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक को 151/-रूपये प्राप्त हुए।

२. जनता कॉलोनी, जयपुर निवासी श्रीमती चन्द्रादेवी कासलीवाल की सुपौत्री सौ. का. संजोली एवं चि. विनीत के विवाहोपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक को 151/-रूपये प्राप्त हुए।

आपको जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

प्रथम पुण्यस्मरण

स्व. श्रीमती मनोरमादेवी पाटनी, धर्मपत्नी श्री बी. एल. पाटनी की प्रथम पुण्यतिथि दिनांक ३१ दिसम्बर, २००३ पर जैनपथप्रदर्शक को २५१/- रूपये की राशि प्राप्त हुई।

फैडरेशन की टेबिल से ...

तीर्थयात्रा सम्पन्न

अहमदाबाद : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा अहमदाबाद के तत्त्वावधान में दिनांक 30 नवम्बर, 2003 को तीर्थयात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय पाठशाला के छात्रों को लघु सम्मेदशिखर, अंदेश्वर पार्श्वनाथ, नागफणी पार्श्वनाथ एवं केशरियाजी की यात्रा करायी गयी।

ज्ञातव्य है कि यहाँ पर पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री, नवरंगपुरा द्वारा वीतराग-विज्ञान पाठमाला, भाग : 1,2 व 3 की तथा पण्डित उदयमणिजी शास्त्री, नरोड़ा द्वारा बालबोध पाठमाला, भाग : 1,2 व 3 की कक्षाएँ नियमित रूप से ली जाती हैं। इसके अलावा फैडरेशन के अन्य प्रशिक्षित सदस्यों द्वारा भी समय-समय पर आवश्यकतानुसार बालकक्षाओं का संचालन किया जाता है।

ह्र पारस जैन

शिक्षण शिविर के अवसर पर फैडरेशन एवं पाठशाला की स्थापना

उदयपुर : यहाँ श्री शान्तिनाथ दिग. जिन चैत्यालय, नेमिनाथ कॉलोनी में श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति, उदयपुर द्वारा दिनांक 12 दिसम्बर से 24 दिसम्बर, 2003 तक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन पण्डित आशीषकुमारजी शास्त्री, टीकमगढ़ के प्रात: सहज-सुख-साधन ग्रंथ पर मार्मिक प्रवचन हुए तथा सायंकाल बालवर्ग के लिए बालबोध पाठमाला की कक्षा एवं युवावर्ग के लिए देव-शास्त्र-गुरु के स्वरूप पर प्रौढ कक्षा चलाई गई। इस शिविर के माध्यम से स्थानीय मुमुक्षु बंधुओं ने धर्मलाभ लिया।

इस पावन प्रसंग पर दिनांक 23 दिसम्बर, 2003 को श्री शांतिनाथ दि.जिन चैत्यालय में वीतराग-विज्ञान रविवारीय पाठशाला की स्थापना डॉ. महावीरप्रसादजी जैन के द्वारा की गई, जिसका उद्घाटन श्री हरखमलजी जैन, उदयपुर ने किया। डॉ. महावीरप्रसादजी द्वारा पाठशाला की आवश्यकता, उपयोगिता एवं महत्ता पर प्रकाश डाला गया। सुरेश शास्त्री एवं जिनेंद्र जैन शास्त्री ने भी अपने विचार प्रगट किए।

दिनांक 23 दिसम्बर को ही दिग. जैन मंदिर, आदर्शनगर (गारियावास) उदयपुर में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की नवीन शाखा की स्थापना राजस्थान प्रान्त के प्रान्तीय उपाध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसादजी जैन की अध्यक्षता में संगठन मंत्री हेमन्त जैन शास्त्री तथा शाखा प्रतिनिधि जिनेंद्र जैन शास्त्री की प्रेरणा से की गई। इस के प्रथम दिन ही 35 सदस्य बने, जिसमें अध्यक्ष हितेश गांधी, उपाध्यक्ष अजय जैन, कोषाध्यक्ष नंदलाल सेठ, सांस्कृतिक मंत्री किशन सेठ, सह सांस्कृतिक मंत्री कु. कीर्ति जैन एवं मंत्री विनोद जैन चुने गए।

ह्र शांतिलाल अखावत

कविता... आओ मिलकर करें विचार

नर-भव जैसे-तैसे पाया,
आना जाना समझ न आया,
रहा अबोध आजतक भीतर, बाहर का मिथ्या संसार।
आओ मिलकर करें विचार ।।1।।
भोग भोग कर नहीं अघाया,
सारा जीवन व्यर्थ गँवाया,
तन से गंगा खूब नहाई, नहीं धुला हैं मनोविकार।
आओ मिलकर करें विचार ।।2।।
पहिने कपड़े नहीं उतारे,
जिये ठसक से, लिये सहारे,
निश्चय की तो बात दूर है, रहे अधूरे सब व्यवहार।
आओ मिलकर करें विचार ।।3।।
जो हैं नहीं उसे अपनाया,
अपने को पहिचान न पाया,
चलने की बिरिया में आखिर, हो पाये कैसे उद्धार।
आओ मिलकर करें विचार ।।4।।
आतम ज्ञान नहीं जग पाया,
मिथ्यातम में जी बीहलाया,
जान-बूझ कर गिरे गर्त में, फिर कैसे हो बेड़ा पार।
आओ मिलकर करें विचार ।।5।।

ह्र डॉ. महेन्द्र सागर प्रचडिया, डी. लिट्

प्रेरक प्रसंग... पदचिह्नों पर

पुष्पक नामक एक ज्योतिष एवं सामुद्रिक शास्त्रों का ज्ञाता महान पण्डित था। एक समय जंगल की ओर जाते समय उसे रास्ते में कुछ पैरों के चिन्ह दिखाई दिये। उन चिन्हों को देखकर उसने यह निश्चित किया कि इन पैरों वाला मनुष्य निश्चित ही कोई महापुण्यवान सम्राट अथवा महापुरुष होगा तथा रास्ता भटकने के कारण वह जंगल की ओर चला गया है। यदि मैं उसे योग्य मार्ग बताऊ तो निश्चित ही मुझे इनाम मिलेगा। यह सोचकर वह उस दिशा की ओर चलने लगा; किन्तु कुछ दूर चलते ही उसने देखा की वह पदचिन्हों वाला मनुष्य नग्नावस्था में ध्यानस्थ है।

भगवान महावीरस्वामी 72 घंटो के उपवास के पश्चात् मगध देश के राजा कुल के यहाँ से आहार ग्रहण करके कुछ देर पूर्व ही वहाँ आकर ध्यानस्थ हुए थे। उन्हें देखते ही पुष्पक स्वयं पर हसने लगा और क्रोध के आवेश में उसने अपने पास रखे हुए समस्त ज्योतिष ग्रन्थों को फाड कर स्वयं के ज्ञान को धिक्कारने लगा।

वह सोचने लगा की वास्तविकता में मेरा ज्ञान मिथ्या है, यदि मेरा ज्ञान यथार्थ होता तो यह पुरुष ऐसी अवस्था में यहाँ क्यों खड़ा है? ऐसे विचारपूर्वक वह महावीरस्वामी के शरीर पर स्थित चिह्नों का निरीक्षण करने लगा, तब उसे ज्ञात हुआ की यह तो वैशाली के राजकुमार महावीर हैं, जो दीक्षित होकर ध्यान में लीन है तथा इस काल के अन्तिम शासननायक होने से इनके द्वारा अनेक जीवों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। अत: अपने कल्याण के लिए वह पुष्पक भी उनके पदचिह्नों पर चलने के लिए कृतसंकल्प हो गया।

ह्र संकलनकर्त्ता : श्रुतेश सातपुते, शास्त्री

तत्वचर्चा

समयसार का सार

82

गतांक से आगे

- डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार में स्पष्ट किया है कि जानने में भी ऐसा ही है; क्योंकि ज्ञेयों को जाननेवाला ज्ञान भी ज्ञान का है, ज्ञेयों को नहीं जाननेवाला ज्ञान भी ज्ञान का ही है। इसके संबंध में उदाहरण दिया था कि जो कलई की सफेदी दीवाल पर दिख रही है, वह सफेदी कलई की है, दीवाल की नहीं।

शिष्य को अभेद स्वस्वामीसंबंध समझ में नहीं आता है, उसे भेदवाला स्वस्वामीसंबंध ही समझ में आता है।

कलई दीवार आदि की नहीं है, तो कलई किसकी है ?

कलई की ही कलई है।

इस कलई से भिन्न ऐसी दूसरी कौनसी कलई है कि जिसकी यह कलई है ?

इस कलई से भिन्न अन्य कोई कलई नहीं है, किन्तु वे स्व–स्वामिरूप दो अंश ही है।

यहाँ स्व–स्वामिरूप अंशों के व्यवहार से क्या साध्य है ?

कुछ भी साध्य नहीं है। इसलिए कलई किसी की नहीं है, कलई कलई की है – यह निश्चय है।

कोई अपनी दुकान चलाता हो तो वह अपने आपको मालिक भी कहता है, मुनीम भी कहता है और चपरासी भी कहता है; क्योंकि तीनों काम वही सम्भालता है।

व्यक्ति तो एक है, उसमें ऐसे भेद करने से क्या लाभ ?

अरे ! वह तीन काम करता है; इसलिए वह अपने को तीनरूप भी कह सकता है और एकरूप भी।

किसी स्कूल में एक ही अध्यापक हो तो वही अध्यापक है और वही प्रधानाध्यापक भी है। कोई कहे कि अकेले हो तो प्रधानाध्यापक क्यों कहते हो ? ऐसा कहना अच्छा नहीं लगता है।

वह कहता है यदि मैं अपनी प्रधानाध्यापक की मोहर कागजों पर नहीं लगाऊँगा तो मेरे इस स्कूल का परीक्षा केन्द्र ही रद्द हो जायेगा। अतएव अपने आपको प्रधानाध्यापक कहना भी आवश्यक है।

प्रत्येक स्कूल में अध्यापक का भी काम होता है और प्रधानाध्यापक का भी काम होता है। दोनों काम अलग–अलग हैं। वह दोनों ही काम करता है; अतः वह अध्यापक भी है और प्रधानाध्यापक भी है।

इसीप्रकार मेरी सम्पत्ति भी ज्ञान है और उस संपत्ति का स्वामी भी ज्ञान है।

जिसप्रकार कलई की कलई है – ऐसा नहीं कहकर कलई कलई है – ऐसा बोला जाता है; उसीप्रकार ज्ञेय का ज्ञान नहीं कहकर ज्ञान ज्ञान है – ऐसा कहा जाता है।

फिर भी कहना तो यही पड़ेगा कि ज्ञेय का ज्ञान है, क्योंकि जैसे किसी ने समयसार को जाना तो उस ज्ञान को समयसार का ज्ञान कहेंगे या ज्ञान का ज्ञान ?

अनंत ज्ञेयों को जाननेवाले प्रत्येक ज्ञान को यदि ज्ञान का ज्ञान कहें तो यह पता ही नहीं चलेगा कि इस ज्ञान का ज्ञेय कौन पदार्थ बना ?

इसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए ज्ञेय का ज्ञान कहा जाता है; किन्तु वह ज्ञान कभी भी ज्ञेय की सम्पत्ति नहीं होता। अतएव ज्ञान का ज्ञान – ऐसा कहा जाता है; क्योंकि ज्ञेय का ज्ञान कहने से कोई उसे ज्ञेय की सम्पत्ति न मान ले।

अब कोई कहे कि तो फिर वह दूसरा ऐसा कौन–सा ज्ञान है, जिस ज्ञान का यह ज्ञान है ?

दूसरा कोई ज्ञान नहीं है, एक में ही स्व–स्वामी संबंध है।

यहाँ ज्ञान का ज्ञान कहकर तो समझाया जा रहा है, वास्तव में या तो यह कहा जायेगा कि ज्ञेय का ज्ञान है या फिर ज्ञान ज्ञान है – ऐसा कहा जायेगा।

अरे भाई ! ज्ञेय को ज्ञान ने जाना, इतने मात्रा से ज्ञेय का ज्ञान होना नहीं कहा जा सकता; क्योंकि ज्ञान ने ज्ञेय में प्रवेश ही नहीं किया और ज्ञेय ने भी ज्ञान में प्रवेश नहीं किया। ज्ञान तो ज्ञान में रहा और ज्ञेय, ज्ञेय में रहा, दोनों एक दूसरे के पास गए ही नहीं।

यदि ज्ञान को ज्ञेय का ज्ञान ज्ञेय के पास जाकर ही होता तो सर्वज्ञ भगवान को अलोकाकाश का ज्ञान कभी नहीं होता; क्योंकि आत्मा तो अलोकाकाश में कभी जाता ही नहीं है।

अलोकाकाश के ज्ञान का दूसरा उपाय यह भी है कि अलोकाकाश स्वयं लोकाकाश के अंदर आ जाए लेकिन ऐसा भी संभव नहीं है।

विभिन्न ज्ञेयों में से इस समय ज्ञान की पर्याय का ज्ञेय कौन बना? मात्रा इतने प्रयोजन की सिद्धि के लिए ज्ञेय का ज्ञान कहा जाता है। ऐसा जानकर ऐसा न मान ले कि ज्ञान ज्ञेय का हो गया, इसलिए ऐसा कहते हैं कि ज्ञान ज्ञेय का नहीं है, ज्ञान तो ज्ञान का है।

कोई कहे कि जैसे किसी ने अपनी एक जेब से पाँच सौ रुपए निकालकर दूसरी जेब में रख लिए तो ऐसा करने से क्या लाभ है ? इसमें लेने–देने की बात करने से क्या फायदा है ? माल तो उसी के पास ही रहा न !

वैसे ही ज्ञानी का ज्ञान, ऐसा क्यों कहना ? क्योंकि ज्ञान तो ज्ञान है और कुछ नहीं।

तात्पर्य यह है कि वहाँ भेद के विकल्प का निषेध जानना, वहाँ जानने का निषेध नहीं है। यही वस्तु का स्वरूप है और यही सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार का सार है।

इसी प्रकरण में वे 373 से 382 तक की गाथाएँ हैं, जिनमें

यह कहा गया है कि शब्द यह नहीं कहते कि तू मुझे जान, रस यह नहीं कहता कि तू मुझे चख, रूप भी यह नहीं कहता कि तू मुझे देख और ज्ञान भी रूपादि के पास उसे देखने–जानने नहीं जाता।

ज्ञान और ज्ञेय दोनों ही निरपेक्ष है। ज्ञान में ज्ञेय जानने में आ जाए तो ठीक, नहीं आए तो नहीं आए – यही निरपेक्षता ज्ञान का स्वभाव है।

पर्यायगत योग्यता से सहज भाव से जो जानना हो जाय तो हो जाय, नहीं हो तो नहीं हो। यही सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार का संदेश है।

पच्चीसवाँ प्रवचन

समयसार परमागम के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार में ज्ञाता–ज्ञेय के संदर्भ में चर्चा हो चुकी है तथा आचार्यदेव ने पूर्व में यह कहा था कि नास्ति सर्वोऽपि सम्बन्धो परद्रव्यात्मतत्त्वयोः अर्थात् परद्रव्य व आत्मा के बीच में न तो एकत्व, ममत्व का ही संबंध है और न कर्तृत्व व भोक्तृत्व का। आचार्यदेव ने यह भी कहा था कि यह भगवान आत्मा पर को मात्रा जानता है।

यह सुनकर किसी के मन में प्रश्न उपस्थित हो कि आत्मा परद्रव्यों को जानता है, इसलिए आत्मा और परद्रव्यों के बीच में ज्ञाता–ज्ञेय संबंध है कि नहीं ? तो इसका उत्तर यह है कि जानना आत्मा का स्वभाव है, यह कोई संबंध नहीं है।

जैसा कि गाथा नं. 361 में कहा है कि –

tg ijn0o lMfn g lfM;k vli.kk lgko.kA
rg ijn0o tk.kfn .kknk fo l,.k Hkko.kAA361AA

जिसप्रकार कलई अपने स्वभाव से दीवाल आदि परद्रव्यों को सफेद करती है; उसीप्रकार ज्ञाता भी अपने स्वभाव से परद्रव्यों को जानता है। ज्ञान अपने स्वभाव से पर को जानता तो है, किन्तु पर में रंचमात्रा भी प्रवेश नहीं करता है।

यह मात्रा ज्ञानगुण के साथ ही नहीं, अपितु दर्शन व चारित्रा गुण के साथ भी है।

ज्ञान की तरह दर्शन, चारित्रा व श्रद्धागुण के लिए भी आचार्य निम्न गाथाएँ कहते हैं –

tg ijn0o lMfn g lfM;k vli.kk lgko.kA
rg ijn0o iLlfn thok fo l,.k Hkko.kAA362AA
tg ijn0o lMfn g lfM;k vli.kk lgko.kA
rg ijn0o fotgfn .kknk fo l,.k Hkko.kAA363AA
tg ijn0o lMfn g lfM;k vli.kk lgko.kA
rg ijn0o lígfn lEefnëh lgko.kAA364AA

जिसप्रकार कलई अपने स्वभाव से दीवाल आदि परद्रव्यों को सफेद करती है; उसीप्रकार जीव अपने स्वभाव से परद्रव्यों को देखता है।

जिसप्रकार कलई अपने स्वभाव से दीवाल आदि परद्रव्यों को सफेद करती है; उसीप्रकार ज्ञाता भी अपने स्वभाव से परद्रव्यों को त्यागता है।

जिसप्रकार कलई अपने स्वभाव से दीवाल आदि परद्रव्यों को सफेद करती है; उसीप्रकार सम्यग्दृष्टि अपने स्वभाव से परद्रव्यों का श्रद्धान करता है।

इसप्रकार जो ज्ञान, दर्शन और चारित्रा में व्यवहारनय का विषय कहा है; अन्य पर्यायों में भी इसीप्रकार जानना चाहिए।

कलई ने दीवाल को सफेद किया – यह तो व्यवहार कथन है, इसीतरह अन्य गुणों के लिए भी व्यवहार कथन कहे जाते हैं; किन्तु ज्ञान गुण के संबंध में निश्चय कथन यह है कि ज्ञान ने परद्रव्य में रंचमात्रा भी प्रवेश नहीं किया।

उपर्युक्त समस्त कथन को यदि समग्र सारांशरूप में कहा जाय तो ज्ञाता–ज्ञेय संबंध कोई संबंध नहीं है, वह तो नाम मात्रा का संबंध है।

इसी बात को हम इस उदाहरण से समझ सकते हैं कि मान लो कोई आदमी मुझे बाजार में मिलता है, वह मुझे प्रेम से नमस्कार करता है और मैं भी प्रेम से उसका जबाब देता हूँ।

तब मेरा साथी मुझसे पूछता है कि ये कौन थे, इनका आपसे क्या संबंध है ?

मैं कहूँ कि मैं इन्हें नहीं जानता। तब वह साथी फिर कहता है कि आपने जिस गहराई के साथ उन्हें नमस्कार किया है, उससे सिद्ध होता है कि आपके और उनके बीच में कोई न कोई संबंध अवश्य है। तब मैंने कहा जब हम बम्बई से आ रहे थे, तो रेल के डिब्बे में सामने की बैंच पर ये बैठे थे तथा बारह घंटे ये हमारे ज्ञान के ज्ञेय बने रहें अर्थात् बारह घंटे लगातार ये हमें देखते रहे और हम इन्हें देखते रहे। हमारे और इनके बीच में मात्रा इतना ही संबंध है।

इसीप्रकार परपदार्थों और हमारा संबंध यही है कि परपदार्थ हमारे जानने में आते हैं। जिसप्रकार सिद्ध भगवान के जानने में नारकी और निगोदिया आ रहे हैं, इसकारण वे नारकी और निगोदिया सिद्धों के संबंधी नहीं हो जाते; उसीप्रकार हमारे ज्ञान में विभिन्न ज्ञेय जानने में आने मात्रा से उनमें और हममें कोई संबंध नहीं हो जाता है।

अतएव ज्ञाता–ज्ञेयसंबंध कोई संबंध ही नहीं है।

(क्रमशः)

ज्ञातव्य है कि डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार पर किये गये 25 प्रवचन **समयसार का सार** नामक 400 पृष्ठीय पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। पुस्तक 25/- रुपये में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.) से प्राप्त की जा सकती है। **– प्रबन्ध सम्पादक**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

मुंबई : यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जैन चैत्यालय, एवरशाईन नगर, मलाड़ (पश्चिम) में पुराने चैत्यालय को विस्तार देकर स्वर्णजडित नवीन वेदी का निर्माण किया गया, जिस पर भगवान महावीर की धवल पाषाण की प्रतिमा एवं भगवान आदिनाथ व भगवान सीमन्धरस्वामी की धातु की प्रतिमायें विराजमान करने हेतु 6 से 8 दिसम्बर, 2003 तक त्रिदिवसीय वेदी प्रतिष्ठा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर समाज के विशेष आग्रह से पधारे डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के प्रात: एवं रात्रि में समयसार कलश-15 तथा गाथा 16 के आधार से मार्मिक प्रवचन हुये। डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों से पूर्व पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर के भी प्रवचन हुये तथा दोपहर में पण्डित पदमचन्दजी सर्राफ, आगरा के प्रवचनों का लाभ भी प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने पण्डित अभिनयजी शास्त्री, जबलपुर एवं श्री राकेशजी, ग्वालियर के सहयोग से सम्पन्न कराए।

प्रतिदिन रात्रि में प्रवचनोपरान्त विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया। **ह्न आर. के. जैन**

प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राजस्थान) की शीतकालीन परीक्षाएँ दिनांक **30, 31 जनवरी एवं 1 फरवरी, 2004** को सम्पन्न होने जा रही हैं। सम्बन्धित परीक्षा केन्द्रों को दो माह पूर्व छात्रों के प्रवेश-फार्म डाक से भेजे जा चुके हैं।

जिन परीक्षा केन्द्रों ने अभीतक प्रवेश फार्म भरकर नहीं भेजे हैं, वे 8 जनवरी, 2004 के पूर्व प्रवेश फार्म अवश्य भिजवाएँ ताकि उन्हें यथासमय रोल नंबर व प्रश्न -पत्र भेजने में सुविधा हो सके। ध्यान रहें, 8 जनवरी, 2003 तक प्राप्त होनेवाले परीक्षा फार्म ही स्वीकृत किए जाएँगे।

ह्न ओमप्रकाश आचार्य, प्रबंधक : परीक्षा विभाग

छपकर तैयार हैं

पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, जयपुर द्वारा लिखित कृतियाँ

1. **हरिवंश कथा**(आचार्य जिनसेन विरचित हरिवंशपुराण पर आधारित द्वितीय संशोधित संस्करण, मूल्य 25/- रूपये) एवं

2. **शलाका पुरुष, पूर्वार्द्ध** (आचार्य जिनसेन विरचित आदिपुराण पर आधारित नवीन संस्करण, मूल्य 25/- रूपये)छपकर तैयार है। इच्छुक महानुभाव निम्न पते से मंगा सकते हैं।

प्राप्तिस्थल : साहित्य विक्रय विभाग, पण्डित टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर। फोन : 2707458, 2705581

जिनमन्दिर का भव्य शिलान्यास समारोह सम्पन्न

अलवर : श्री दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल, श्री दिग. जैन कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा अलवर द्वारा दिनांक 18 से 20 दिसम्बर, 2003 को श्री रत्नत्रय दिगम्बर जिनमन्दिर का भव्य शिलान्यास समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर देश-विदेश में विख्यात डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रात: एवं रात्रि में सारगर्भित प्रवचन हुए। इसके अलावा पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री भरतपुर, डॉ. महावीरप्रसादजी जैन उदयपुर एवं स्थानीय विद्वान करणानुयोग विशेषज्ञ पण्डित किशनचन्दजी जैन का भी उपस्थित श्रोताओं को प्रवचन व व्याख्यानों के माध्यम से धर्मलाभ प्राप्त हुआ।

इस पावन प्रसंग पर श्री रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन भी किया गया। दिनांक 20 दिसम्बर को प्रात: 8 बजे श्री महावीर जिनालय (काला कुआँ) से भव्य घटयात्रा शिलान्यास स्थल चेतन एन्क्लेव, जयपुर रोड,अलवर पहुँची। वहाँ पर श्री रत्नत्रय दिगम्बर जिनमन्दिर का शिलान्यास श्री रतनलालजी वंदना प्रकाशन अलवाल, श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन का शिलान्यास श्री रतनलालजी जैन अशोका रेडीमेड, अलवर, एवं श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला भवन का शिलान्यास श्रीमती सुमित्रादेवी धर्मपत्नी स्व. फूलचन्दजी जैन अलवर, के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुए।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व में पण्डित प्रेमचन्दजी जैन अलवर, पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री, कोटा द्वारा ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद एवं पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री, अलवर के निदेर्शन में सम्पन्न हुए।

जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से समस्त लेखकों, संवाददाताओं एवं पाठकों को नव वर्ष के अवसर पर हार्दिक शुभ कामनायें।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जनवरी (प्रथम) 2004

J.P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर,** डबल एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन) तथा इतिहास
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127